दिगंशेभ्यो दिक्साधनप्रकारः —

समभुवि निहिते तुरीययन्त्रे स्पृशति यथाथ दिगंशकाग्रकेन्द्रे।
अवलम्बविरोधकेन्द्रसंस्थशलाकाभा दिशोऽत्र यन्त्रगाः स्युः॥

अन्वयः – अथ समभुवि तुरीययन्त्रे निहिते दिगंशकाग्रकेन्द्रे अवलम्बविरोधकेन्द्रसंस्थशलाकाभा यथा स्पृशति अत्र यन्त्रगाः दिशः स्युः।

तारा – अथ दिगंशसाधनानन्तरं, समभुवि समतले क्षेत्रे, तुरीयाख्ये यन्त्रे निहिते सति, दिगंशकाग्रकेन्द्रे, अवलम्बविरोध-तुरीययन्त्रसम्बन्धि दिगंशकाग्रकेन्द्रे, अवलम्बविरोध-केन्द्रसंस्थशलाका तुरीययन्त्रकेन्द्रस्थितशलाकायाः भा छाया, यथा स्पृशति स्पर्शं करोति तथा यन्त्रे साधिते सति, अत्र प्रसङ्गेऽस्मिन्, यन्त्रगाः तुरीययन्त्रस्य भुजद्वयरूपा भवन्ति अत्रायमाशयः – एको भुजः पूर्वापररूपः – द्वितीयो याम्योत्तररूपः, इति दिशः स्युरिति। अत्र वृत्तस्य तुरीयो भागः तुरीययन्त्रनाम्ना व्यवह्रियते।

भावार्थः – जल के समान बराबर हुई भूमि पर अपने अभीष्ट इष्टकाल में तुरीययन्त्र को रखकर उसे दिगंशों से चिह्नित करना चाहिये। तात्पर्य यह है कि उक्त यन्त्र की परिधि पर जितने दिगंश हों, उतने ही अंशों पर चिह्न लगाना चाहिये तथा तुरीययन्त्र के मध्यम बिन्दु पर एक शलाका को इस प्रकार खड़ी करें, जिससे उसकी छाया तुरीययन्त्र के केन्द्र और दिगंश के अग्र बिन्दु का स्पर्श कर सके। इस प्रकार उक्त लक्ष्य को सिद्ध करके दोनों के मध्य में एक रेखा खींचें, इस पर पूर्वापर रेखा के मध्य से एक लम्ब खींचने पर दक्षिणोत्तर रेखा का साधन होता है।

विशेष – दिगंशों को साधन करने का पहले बताया

P.T.O

Date 30.10.20
Page 4

जा चुका है। विश्वनाथ तथा मल्लारि का मत है कि धरातल उतना समान हो, जितना जल का धरातल समान होता है, ऐसी स्थिति में एक चतुर्थांश की आकृति का वृत खींचें, जिसे तुरीययन्त्र कहते हैं। इस यन्त्र को समतल भूमि पर रखकर इस प्रकार अंशों से अंकित करें कि वह पूर्वापर स्थिति में दिखलायी दे और वह जिस प्रकार तुरीययन्त्र के केन्द्र और दिगंश के अग्र बिन्दु का स्पर्श कर सके, इस प्रकार करने से उक्त यन्त्र की एक भुजा पूर्वापर (पूर्व-पश्चिम) और दूसरी भुजा दक्षिणोत्तर हो जाती है।

डॉ० सुदियर कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।

गोलाध्यायम्

शास्त्री-III त्रिप्रश्नाधिकार

प्रकारान्तरेण दिगंशसाधनप्रकार: —

द्युमानखगुणान्तरं शिवगुणं दिनेऽल्पाधिके
ह्यपागुदगथानुदग्भवति यन्त्रभागापम:।
वसुघ्न्युभयसंस्कृतिर्नवतियन्त्रभागान्तरोद्-
भवापमहृतास्ततो भुजलवा दिगंशा स्मृता:।

अन्वय:- शिवगुणं द्युमानखगुणान्तरं दिने अल्पाधिके अपाक् उदक् भवति। अथ हि यन्त्रभागापम: अनुदक्, उभयसंस्कृति: वसुघ्नी तत: नवति-यन्त्रभागान्तरोद्भवापमहृता, भुजलवा: दिगंशा: स्मृता:।

तारा- शिवगुणम् एकादशभिर्गुणितं, द्युमानखगुणान्तरं दिनमानं त्रिंशच्च तयोरन्तरं, यत् फलं, तद् दिने खगुणाद् ३० अल्पे सति अपाग् दक्षिणदिक् तथा खगुणादधिके दिनमाने, उदक् उत्तरदिक् फलं भवति।

अथ हि यन्त्रभागापम: यन्त्रोन्नतांशजनितक्रान्ति:, सर्वदा अनुदक् दक्षिणदिग् भवति, उभयसंस्कृति: शिवगुणान्तरयन्त्रभागापमयोरेकदिक् सम्बन्धियोग:, भिन्नदिक्त्वेऽन्तरमित्याशय:, वसुघ्नी अष्टगुणिता, तत: नवतियन्त्रभागान्तरोद्भवापमहृता नवतिसङ्ख्यकयन्त्रभागयो: अन्तरत: य: अपम: तेन भक्ता, तत:, ये भुजलवा: तेन: भुजांशा:, ते दिगंशा: स्मृता:, समाम्नाता:।

भावार्थ:- दिनमान में से ३० घड़ी को घटाकर शेष बची हुई संख्या को ११ से गुणा करें। जो गुणनफल प्राप्त होगा, वह अंशादि होगा। वह यदि दिनमान ३० घड़ी से अधिक हो, तो उत्तर और कम हो, तो दक्षिण होता है। इसके बाद यन्त्रोन्नतांश से क्रान्ति साधन करें। इस क्रान्ति को सदा दक्षिण समझें। इस क्रान्ति और उपर्युक्त अंशादि गुणनफल की दिशा एक ही हो, तो दोनों को जोड़ दें और यदि क्रान्ति तथा अंशादि गुणनफल की

P.T.O

Date 30.10.20
Page 2

दिनार्ध भिन्न-भिन्न हो, तो बड़ी संख्या में से छोटी संख्या को घटा दें। जो शेष मिले, उसको ८ से गुणा करें। गुणनफल में ९० का भाग दें और मध्योन्नतांश के अन्तर द्वारा साधित क्रान्ति के भाग से जो लब्धि मिले वह क्रान्ति होती है। इस क्रान्ति से भुजांश का साधन करें। इस भुजांश को ही दिगंश कहते हैं।

डॉ० सुदिष्ट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० सुरवसेना
पूर्णियाँ।